ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

हिंद महासागर में सुरक्षा भागीदार के रूप में भारत की भूमिका

तरुण कुमार सिंह
शोध छात्र, राजनीतिक विज्ञान विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

प्रस्तावना :-

वर्तमान परिदृश्य में हिंद महासागर आर्थिक एवं सुरक्षा की दृष्टि से विश्व का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। हिंद महासागर के समुद्री भौगोलिक स्थिति और संरचना के कारण उसके महत्व भारी वृद्धि हुई है। हिंद महासागर महाशक्तियों के प्रतिस्पर्धा का केंद्र बना हुआ है। हिंद महासागर के गर्भ में मौजूद कच्चे माल के भंडार महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा का कारण है। हिंद महासागर में बढ़ते व्यापार एवं प्रतिस्पर्धा के कारण महासागर में उपस्थित खनिज संसाधनों का आर्थिक दोहन एवं पर्यावरण क्षरण में भारी वृद्धि हुई है। हिंद महासागर के जलमार्ग के माध्यम से व्यापार की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान है। महासागर के जलमार्ग के माध्यम से आर्थिक व्यापार में वृद्धि हुई है जिसके वजह से समुद्री डकैती इजाफा हुआ है। महासागर में समुद्री डकैती, आतंकवाद, अवैध फिशिंग, मादक पदार्थों की तस्करी और पर्यावरणीय क्षरण से लेकर वृहत शक्ति प्रतिद्वंद्विता तक विभिन्न खतरे मौजूद हैं। हिंद महासागर में चीन अपना एकाधिकार करने का प्रयंत कर रहा है जिसके कारण अन्य देशों के साथ टकराव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इस कारण इस क्षेत्र में शांति और सहयोग का वातावरण बनाना तथा ऐसी परिस्थितियों का उत्पन्न करना बहुत आवश्यक है जिसमें सभी राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय विधि के अनुरूप महासागर का निर्बाध उपयोग एवं पर्यावरण का संरक्षण कर सके।

मुख्य शब्द :- *सुरक्षा, पर्यावरण क्षरण, समुद्री डकैती, आतंकवाद अवैध फिशिंग, भारत, चीन, SAGAR, इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA), इंडियन ओशन नेवल सिम्पोजियम (IONS), नेबरहुड फ़र्स्ट, बे ऑफ़ बंगाल इनिशिएटिव फ़ॉर मल्टी-सेक्टोरल टेक्निकल एंड इकनोमिक कोऑपरेशन (BIMSTEC), चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (क्वाड), इंडो-पैसिफ़िक ओशन इनिशिएटिव (IPOI)*

हिंद महासागर :-

हिंद महासागर की समुद्री भौगोलिक स्थिति वैश्विक भू-राजनीति के लिए एक अहम सामरिक मंच बनकर उभरी है। हिंद महासागर विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है और पृथ्वी की सतह उपस्थित पानी का लगभग 20% भाग इसमें समाहित है। इसे अर्द्धमहासागर भी कहा जाता है। इसका उत्तरी सीमा अत्यंत दंतुरित (कटी-फटी) है। औसत गहराई अन्य महासागरों से अपेक्षाकृत कम (लगभग 4,000 मी.) है। यह तीन महाद्वीपों में फैला है। उत्तर में यह भारतीय क्षेत्र (भारतीय उपमहाद्वीप) से पश्चिम में पूर्व अफ्रीका, पूर्व में कंबोडिया ,लाओस ,वियतनाम, मलेशिया ,इंडोनेशिया, मलेशिया (मलय सागर) सुंदा द्वीप समूह और आस्ट्रेलिया तथा दक्षिण में दक्षिण ध्रुवीय महासागर से घिरा हुआ है। हिंद महासागर में स्थित देशों की कुल संख्या लगभग 43 है, जिनमें से एशिया के 13

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

देश **(भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव, थाईलैंड, म्यांमार (बर्मा), इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, वियतनाम, कंबोडिया, फिलीपींस)**, अफ्रीका के 19 **(दक्षिण अफ्रीका, मोजाम्बिक, तंजानिया, केन्या, सोमालिया, इरिट्रिया, जिबूती, ईथियोपिया, जिम्बाब्वे, नामीबिया, अंगोला, मेडागास्कर, मॉरीशस, सेशेल्स, कोमोरोस, रियूनियन, मायोट, टांजानिया, युगांडा)**, एवं मध्य पूर्व के 8 देश **(ओमान, यमन, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, बहरीन, कुवैत, इस्राइल, जॉर्डन)** और अन्य 3 देश **ऑस्ट्रेलिया, फिजी, पापुआ न्यू गिनी** है। इन देशों के अलावा, कई अन्य छोटे द्वीप राष्ट्र और क्षेत्र भी हिंद महासागर में स्थित हैं। हिंद महासागर क्षेत्र में विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 35% निवास करता है, जो दुनिया की आबादी का एक तिहाई है।

ग्लोबल साउथ एक जटिल एवं उभरते समुद्री सुरक्षा वातावरण का सामना कर रहा है। हिंद महासागर में उपस्थित ऊर्जा के संसाधन और ब्लू इकोनॉमी (मछलियों और दूसरे समुद्री जीवों का व्यापार) की वजह से बढ़ते व्यापार से समुद्री परिवहन में वृद्धि के कारण हिंद महासागर का महत्व बढ़ता जा रहा है। हिंद महासागर में प्रतेक देश अपना प्रभुत्व कायम करने का प्रयास कर रहे हैं जिसके कारण देशों के मध्य टकराव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। देशों के रणनीतिक नज़रिए में भी बदलाव दिख रहा है, जिन्हें लगता है कि इस क्षेत्र में उनकी भी हिस्सेदारी होनी चाहिए, जिसके कारण अलग-अलग देश अपनी भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक के अनुसार हिंद महासागर को लेकर अपना दृष्टिकोण तय कर रहे हैं।

हिंद महासागर का पर्यावरणीय दोहन तथा प्रभाव :-

पर्यावरण की दृष्टि से हिंद महासागर में उपस्थित खनिजों का दोहन एवं पर्यावरण का शोषण किया जा रहा है जिसे अनेक प्रकार की दुष्परिणाम दिख रहे हैं जैसे जल प्रदूषण, समुद्र में तेल रिसाव के कारण समुद्री जीवन पर प्रभाव, इकोसिस्टम की क्षति, मछली पालन, मत्स्य पालन के कारण संबंधी संसाधनों की कमी, समुद्री कचरा तथा प्लास्टिक प्रदूषण में वृद्धि हो रही है जिसके कारण जलवायु परिवर्तन और समुद्री स्तर में वृद्धि हो रही है।

- पर्यावरणीय क्षरण के कारण समुद्री क्षेत्र में चक्रवात और सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति एवं तीव्रता में वृद्धि के कारण महासागर के तटीय क्षेत्रों में चक्रवात, सुनामी एवं बाढ़ जैसे आपदाओं में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हुई है जो अत्यधिक चुनौतियां उत्पन्न कर रही हैं। जैसे 2004 के हिंद महासागर के भूकंप और सुनामी जिसे **बॉक्सिंग डे सुनामी** के रूप में भी जाना जाता है। यह एक अस्थिर मेगाथ्रस भूकंप था जिसने 9.1-9.3 मेगावॉट की तीव्रता दर्ज की। ऐसे अनेक भूकंप हिंद महासागर में अपनी मौजूदगी दर्ज कराते रहते हैं।
- समुद्र में तेल रिसाव जैसी घटनाएं और प्लास्टिक अपशिष्ट सहित समुद्री क्षेत्र के लिये पर्यावरणीय और आर्थिक खतरा उत्पन कर रहे है जिसके कारण जलीय जीव के जीवन पर भारी संकट उत्पन्न हो रहे हैं। जैसे 2020 में मॉरीशस, हिंद महासागर के तट पर **वाकाशियो तेल** रिसाव कि

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

घटना एमवी वाकाशियो नामक एक जापानी जहाज मॉरीशस के दक्षिण-पूर्वी तट पर एक मूंगा चट्टान से टकरा गया। 4000 टन कच्चे तेल से लदा यह जहाज हिंद महासागर में रिसने लगा। टूटे हुए जहाज से 1000 टन से अधिक तेल रिसने लगा, जिससे द्वीप राष्ट्र की मूंगा चट्टानें, समुद्र तट और लैगून प्रदूषित हो गए। इसे मॉरीशस के प्रधानमंत्री **प्रविंद जगन्नाथ** ने 7 अगस्त को तेल रिसाव को "**पर्यावरणीय आपातकाल**" घोषित किया ।

- समुद्र का बढ़ता जल स्तर, जलवायु परिवर्तन और संबंधित प्रभाव अल्पविकसित देशों को असंगत रूप से प्रभावित करते हैं, जिससे वे पर्यावरणीय बदलावों और चरम मौसमी घटनाओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** के अनुसार, पिछली शताब्दी (वर्ष 1900-2000) के दौरान भारतीय तट पर समुद्र का स्तर औसतन लगभग **1.7 मिमी/वर्ष** की दर से बढ़ता हुआ देखा गया। समुद्र के स्तर में **3 सेमी. की वृद्धि** से समुद्र लगभग **17 मीटर** तक अंतर्देशीय घुसपैठ कर सकता है।
- महासागर में अवैध मत्स्यग्रहण गतिविधियों से समुद्री सुरक्षा को खतरा पहुँचता है, जो समुद्री संसाधनों को कम कर सकता है और तटवर्ती समुदायों की आजीविका को नुकसान पहुँचा सकता हैं। महासागर में जलमार्ग के माध्यम से मानव और मादक पदार्थों की तस्करी जैसी अवैध गतिविधियाँ की जाती हैं।
- हिंद-प्रशांत में शक्तिशाली देशों के बीच कथित **शून्य-संचय** या **ज़ीरो-सम प्रतिस्पर्द्धा** को विशेष रूप से विकासशील देशों के लिये एक खतरे के रूप में चिह्नित किया जाता है। यह प्रतिस्पर्द्धा एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी प्रशांत क्षेत्र के तटीय देशों की सुरक्षा चिंताओं एवं संसाधनों के विचलन की स्थिति उत्पन्न कर सकती है।
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में **शून्य-संचय प्रतिस्पर्द्धा** शब्दावली इस विचार को संदर्भित करती है कि इस क्षेत्र में **अमेरिका** और **चीन** के हित एवं कार्य परस्पर अनन्य एवं असंगत हैं और एक पक्ष के लिये कोई भी लाभ दूसरे के लिये हानि की स्थिति है। यह दृष्टिकोण मानता है कि हिंद-प्रशांत एक शून्य-संचय खेल है, जहाँ दो शक्तियाँ प्रभाव, संसाधन और सुरक्षा के लिये प्रतिद्वंद्विता में संलग्न हैं।

वर्तमान में हिंद महासागर विश्व का ऐसा क्षेत्र है, जिनकी स्थिति अशांत एवं असुरक्षित है। राजनीतिक हलचल और महाशक्तियों के सैनिक टकराव का केंद्र बन गया है जो अपना वर्चस्व एवं उपस्थिति बढ़ाने में लगी है विशेषकर अमेरिका एवं चीन। चीन का हिंद महासागर में अपने एकाअधिकार काबिज करना एवं जलमार्ग को बाधित करना चिंता का विषय है। चीन के द्वारा महासागर में सैन्य गतिविधियों के माध्यम से क्षेत्र में भय का माहौल बनाना भी चिंतनीय है। महासागर के अनेक दीपों जैसे श्रीलंका, मालदीव तथा मॉरीशस आदि में भारत के अधिकांश लोग निवास करते हैं तथा उनके हितों एवं अधिकारों की रक्षा भी जरूरी है। महासागर क्षेत्र में महाशक्तियों की बढ़ते हलचल से भारत की चिंता बढ़ना स्वाभाविक है। इस प्रकार की सैन्य गतिविधियों से भारत के राष्ट्रीय हित पर

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

सीधा असर पड़ता है। प्रारंभ से ही भारतीय विदेश नीति अपने राष्ट्रीय सुरक्षा तथा राष्ट्रीय गीत के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु दक्षिण एशिया में बनाई जाने वाले तनाव और हिंद महासागर की सैनीकरण का विरोध करती है।

भारत के लिए हिंद महासागर का महत्व एवं सुरक्षा :-

भारत की 7000 किमी से अधिक लंबी तटरेखा हिंद महासागर से जुड़ी हुई है। भारत हिंद महासागर से तीन ओर से घिरा हुआ है। हिंद महासागर भारत के लिए केंद्रीय महत्व का बिंदु है। इस महासागर की आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियां प्रारंभिक काल से भारतीय उपमहाद्वीप से जुड़ी हुई है। हिंद महासागर भारत के व्यापार और वाणिज्य के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग है, जो देश की आर्थिक विकास में योगदान करता है। भारत की अर्थव्यवस्था व्यापक रूप से समुद्री क्षेत्र पर निर्भर करती है। हिंद महासागर में समुद्री डकैती या पाइरेसी, आतंकवाद, तस्करी, अवैध मत्स्यग्रहण और पर्यावरणीय क्षरण जैसे विभिन्न खतरों के प्रति संवेदनशील बनाता है। भारत को अपनी तटीय और अपतटीय आस्तियों–जैसे तेल एवं गैस प्रतिष्ठानों, मत्स्यग्रहण क्षेत्रों और बंदरगाहों को इन खतरों से बचाने की ज़रूरत है।

भारत के लिए हिंद महासागर का महत्व निम्नलिखित है:

- हिंद महासागर में स्थित तेल और गैस के भंडार भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। भारत अपने कच्चे तेल का **लगभग 80% आयात** करता है ।
- भारत का लगभग **95% व्यापार** और मूल्य के हिसाब से **68% व्यापार** हिंद महासागर के माध्यम से होता है। वाणिज्यिक यातायात के प्रवाह में किसी भी तरह की बाधा का देश के आर्थिक उद्देश्यों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ेगा।
- हिंद महासागर भारत को एशिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व से जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण मार्ग है, जो देश की रणनीतिक स्थिति को मजबूत बनाता है।
- हिंद महासागर में मछली पालन और मत्स्य पालन भारत के लिए एक महत्वपूर्ण उद्योग है, जो देश की खाद्य सुरक्षा में योगदान करता है। यह **14 मिलियन** से अधिक लोगों को **रोजगार** प्रदान करता हैं।
- हिंद महासागर के तट पर स्थित पर्यटन स्थल भारत के लिए एक महत्वपूर्ण आय का स्रोत हैं।
- हिंद महासागर भारत की **सांस्कृतिक विरासत** का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो देश के इतिहास और पुरातत्व को दर्शाता है।
- हिंद महासागर में **वैज्ञानिक अनुसंधान** भारत के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो देश की वैज्ञानिक प्रगति में योगदान करता है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

- सैन्य रूप से, एक लंबी तटरेखा की उपस्थिति भारत को समुद्र से उभरने वाले संभावित खतरों के प्रति संवेदनशील बनाती है। मुंबई में हुए सबसे भयानक आतंकवादी हमलों में से एक समुद्र के रास्ते आने वाले आतंकवादियों द्वारा किया गया था।
- समुद्री डकैती, तस्करी, अवैध मछली पकड़ने और मानव तस्करी जैसे गैर-पारंपरिक खतरों की उपस्थिति भी बड़ी चुनौतियां पेश करती है। ज्ञातव्य हो कि गुजरात तट, मुंबई तट आदि के पास नशीली दवाओं की तस्करी के कई मामले सामने आए हैं।

इन कारणों से, हिंद महासागर भारत के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो देश की आर्थिक, रणनीतिक, सामुद्रिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और राजनीतिक हितों को प्रभावित करता है। भारत ने हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा के लिए कई संरचनाएं और रूपरेखाएं बनाई हैं। हिंद महासागर में भारत की नौसेना की उपस्थिति देश की सामुद्रिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। इनमें **इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA), इंडियन ओशन नेवल सिम्पोजियम (IONS), नेबरहुड फ़र्स्ट, बे ऑफ़ बंगाल इनिशिएटिव फ़ॉर मल्टी-सेक्टोरल टेक्निकल एंड इकनोमिक कोऑपरेशन (BIMSTEC), चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (क्वाड), इंडो-पैसिफ़िक ओशन इनिशिएटिव (IPOI),** और **कोएलिशन फ़ॉर डिजास्टर रेसिलिएंट इंफ़्रास्ट्रक्चर (CDRI)** शामिल हैं।

29 फरवरी, 2024 को, भारतीय प्रधानमंत्री **नरेंद्र मोदी** और मॉरीशस के प्रधान मंत्री **प्रविंद जगन्नाथ** ने संयुक्त रूप से **मॉरीशस** के **अगालेगा द्वीप** में **छह भारतीय-सहायता** प्राप्त विकास परियोजनाओं के साथ एक नई हवाई पट्टी और जेटी का उद्घाटन किया। मॉरीशस के मुख्य द्वीप से 1,100 किलोमीटर उत्तर में स्थित यह रणनीतिक द्वीप सेशेल्स, मालदीव, चागोस द्वीप समूह, मेडागास्कर और अफ्रीका के पूर्वी तट से निकटता के कारण काफी महत्वपूर्ण है।

हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री सहयोग नीति को **"सुरक्षा और विकास सभी के लिए (SAGAR)"** के नाम से जाना जाता है। भारतीय प्रधानमंत्री **नरेंद्र मोदी** द्वारा 12 मार्च 2015 को इस नीति की घोषणा की गई थी। इस नीति का लक्ष्य तटीय सुरक्षा को सुदृढ़ करना है जिससे स्थलीय एवं समुद्री सीमाओं की सरलता से रक्षा की जा सके। 2015 में मॉरीशस के नौसैनिक जहाज **बाराकुडा** का जलावतरण भारत की समुद्री कूटनीति के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण था।

2017 से, भारतीय नौसेना की हिंद महासागर में परिचालन तैनाती, मिशन आधारित तैनाती अवधारणा के तहत आयोजित की गई है। इस सक्रिय दृष्टिकोण ने नौसेना को समुद्री डकैती और तस्करी सहित उभरते खतरों का तेजी से जवाब देने में सक्षम बनाया है।

भारतीय नौसेना ने 14 दिसंबर, 2023 से 23 मार्च, 2024 तक **'ऑपरेशन संकल्प'** नाम का समुद्री सुरक्षा अभियान चलाया।

अतः एक सुरक्षित हिंद महासागर भारत के राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करने की कुंजी हैं। भारत अपनी अधिकांश ऊर्जा आवश्यकताओं का आयात भी समुद्री क्षेत्र से, विशेषकर खाड़ी क्षेत्र से करता

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

है। इस परिदृश्य में, भारत को हिंद महासागर में और उससे आगे के क्षेत्रों में संचार के समुद्री मार्गों की सुरक्षा एवं नौवहन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने की आवश्यकता है, जो इसके आर्थिक विकास और ऊर्जा सुरक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण हैं। मॉरीशस में भारत का बुनियादी ढांचा विकास इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए एक रणनीतिक कदम है।

निष्कर्ष :-

हिंद महासागर में असुरक्षा, समुद्री डकैती, आतंकवाद, अवैध फिशिंग, मादक पदार्थों की तस्करी और पयावरणीय क्षरण जैसे प्रमुख समस्याएं उपस्थित हैं। हिंद महासागर के तटीय क्षेत्रों में सतत् विकास, क्षेत्रीय एकीकरण और बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से गरीबी, असमानता, भ्रष्टाचार, शासन और जलवायु परिवर्तन जैसे गैर-पारंपरिक खतरों का समाधान किया जा सकता है। इसके लिए तटीय एवं अपतटीय क्षेत्रों की उन्नत प्रौद्योगिकीय निगरानी नेटवर्क, नेशनल कमांड कंट्रोल कम्युनिकेशन एंड इंटेलिजेंस नेटवर्क, राष्ट्रीय स्वचालित पहचान प्रणाली और राष्ट्रीय समुद्री डोमेन जागरूकता परियोजना जैसी विभिन्न परियोजनाओं एवं योजनाओं का कार्यान्वयन शामिल है। समुद्री सुरक्षा एजेंसियों की क्षमता बढ़ाना ,समुद्री क्षेत्रों की निगरानी एवं गश्त के लिये अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के लिये नौसेना, तट रक्षक एवं समुद्री पुलिस का आधुनिकीकरण और विस्तार करना शामिल है। इसके तहत विमान वाहक, पनडुब्बी, फ्रिगेट, हेलीकॉप्टर, रडार एवं उपग्रह जैसे उन्नत प्लेटफॉर्मों, प्रणालियों एवं उपकरणों का अधिग्रहण करना भी शामिल है। इनका उद्देश्य मछुआरों और तटवर्ती समुदायों को समुद्री सुरक्षा ढाँचे में शामिल करना तथा उनकी सुरक्षा एवं कल्याण को बढ़ाना है। ये तटीय समुदायों की आजीविका, प्रत्यास्थता एवं सुरक्षा में सुधार करने और आपराधिक गतिविधियों के लिये प्रोत्साहन एवं अवसरों को कम करने में मदद कर सकते हैं। द्विपक्षीय, त्रिपक्षीय या बहुपक्षीय तंत्र के माध्यम से समान विचारधारा वाले देशों के बीच समुद्री सुरक्षा सहयोग को बेहतर बनाने की आवश्यकता है। ऐसी आचार संहिता विवादों को रोकने या प्रबंधित करने, तनाव कम करने और समुद्री शक्तियों के बीच विश्वास निर्माण उपायों को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है। इस तरह के सहयोग में सूचना साझेदारी, संयुक्त अभ्यास, क्षमता निर्माण, अंतरसंचालनीयता और साझा खतरों के प्रति प्रतिक्रियाओं का समन्वयन शामिल हो सकता है। समुद्री क्षेत्र के लिये एक साझा आचार संहिता या मानदंडों एवं नियमों का एक समूह विकसित करना जो अंतर्राष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून अभिसमय पर आधारित हो।

हिंद महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए, भारत को सावधानी और रणनीतिक कौशल का प्रयोग करना चाहिए। भारत द्वारा स्वयं को एक **"नेट सुरक्षा प्रदाता"** के रूप में स्थापित करने के लिए सहयोग और प्रतिस्पर्धा के बीच सही संतुलन बनाना आवश्यक है। एशिया और अफ्रीका के तटवर्ती देशो को समुद्री खतरों से निपटने के लिये अपने प्रयासों में समन्वय स्थापित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। असमान कानून-प्रवर्तन क्षमताएँ और अलग-अलग सुरक्षा

प्राथमिकताएँ प्रभावशील सहयोग में बाधा उत्पन्न करती हैं। उदाहरण के लिये, आसियान (ASEAN) देश प्रायः दक्षिण चीन सागर में चीन की आधिपत्यवादी कार्रवाइयों का विरोध करने में अनिच्छा प्रकट करते हैं। प्रमुख राष्ट्रों, विशेष रूप से फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ साझेदारी, सहयोग, जटिल भू-राजनीतिक चुनौतियों का सामना करने और समुद्री प्रभुत्व में भारत की प्रमुखता को सुरक्षित करने में सहायक होगी। भारत इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता है, इसलिए नौसेना सहयोग और प्रतिस्पर्धा में एक नाजुक संतुलन बनाए रखना अनिवार्य हो जाता। बहु-गुट सहयोग भारत के एक प्रमुख समुद्री शक्ति और वैश्विक दक्षिण के प्रतिनिधि के रूप में उभरने को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। सुरक्षित समुद्र का दृष्टिकोण भारत को एक ऐसे भविष्य की ओर आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करता है जो प्रत्यास्थता, अनुकूलनशीलता और सहयोग को महत्त्व देता है। भारत समुद्री सुरक्षा के लिये प्रतिबद्ध है और इसने उभरते परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिये SAGAR और IONS जैसी पहलें की है। भारत का क्षमता निर्माण और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग न केवल इसकी तटरेखा की रक्षा करता है बल्कि वैश्विक समुद्री स्थिरता में भी योगदान देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

i. सी.एम. कोहली, "प्रमुख देशों की विदेश नीतियाँ, प्रकाशकः साहित्य गार पब्लिशर्स जयपुर, संस्करण-2000
ii. आरपी जोशी व अमिता अग्रवाल, "अंतर्राष्ट्रीय संबंध, प्रकाशकः यूनिवर्सिटी बुक हाउस जयपुर, संस्करण 2000
iii. वी.पी. सिंह, "अंतर्राष्ट्रीय राजनीति व भारतीय सुरक्षा, प्रकाशकः चंद प्रकाश बुक डिपो, हापुड़
iv. डॉ० अर्चना उपाध्याय "भारतीय विदेश नीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध, प्रकाशक संजय प्रकाशन, असारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण 2005
v. डॉ० प्रभुदत्त शर्मा, "विदेश नीतियां प्रकाशकः कॉलेज बुक डिपो, जयपुर संस्करण 2002
vi. डी.सी. गुप्ता, "अंतर्राष्ट्रीय संबंध" प्रकाशकः मेट्रोपोलिटन बुक कंपनी, नई दिल्ली, संस्करण 1998
vii. आर.एस. यादव, "भारत की विदेश नीति, प्रकाशकः किताब महल, 22 सरोजिनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद
viii. जे.एन. दीक्षित, "भारतीय विदेश नीति, प्रकाशकः प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2008
ix. प्रभुदत्त शर्मा, "अंतर्राष्ट्रीय राजनीति," प्रकाशकः कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, संरकरण-1999

x. डॉ० सुरेन्द्र कुमार मिश्र, "राष्ट्रीय रक्षा व सुरक्षा, प्रकाशका माडर्न पब्लिशर्ज जालंधर, संस्करण-2006

xi. डॉ० बाबूराम पाण्डेय व डॉ० रामसूरत पाण्डेय, "राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध," प्रकाशकः प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार बरेली, संस्करण-2005

xii. डॉ० एस.बी. सिंह, डॉ० आर.एस. पाण्डेय "भारत की सुरक्षा समस्याएं" प्रकाशकः चंद्रप्रकाश एंड कंपनी हापुड़, संस्करण-2004

xiii. डॉ० श्रीमती तारा देवी सिंह, 'हिन्द महासागर एवं परिमण्डलीय राष्ट्र के भौगोलिक अध्ययन।"

xiv. दीनानाथ वर्मा, "अंतर्राष्ट्रीय संबंध, प्रकाशक ज्ञानदा प्रकाशन, 24. दरियागंज अंसारी रोड, नई दिल्ली, संस्करण 1996

xv. देवेन्द्र कौशिक, हिन्द महासागर व भारतीय सुरक्षा", प्रकाशकः रचना पब्लिकेशन, दिल्ली

xvi. जे.एम. श्रीवास्तव, "राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा." प्रकाशकः चन्द्र प्रकाशन एंड कंपनी कोठी प्यारेलाल, हापुड, संस्करण-2003

xvii. डॉ० परशुराम गुप्त. राष्ट्रीय रक्षा और भारतीय विदेश नीति." प्रकाशकः प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार बरेली, संस्करण 2004

xviii. डॉ० बी.एल. फड़िया, "अंतर्राष्ट्रीय संबंध" प्रकाशकः साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, संस्करण-2004

xix. डॉ० अशोक कुमार सिंह, "अंतर्राष्ट्रीय राजनीति तथा रक्षा अध्ययन, प्रकाशकः प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार बरेली, संस्करण-1999

OTHERS REFERENCES:

i. Rasul B. Rais, "The Indian Ocean and the Superpower," Vistar Publication, New Delhi, 1987.

ii. Dr. A. Sivathanu Pillari, Dr. R.K. Tiwari, "Ocean Warfare," Manas Publication, Delhi, 2006.

iii. Jon Guttman, "Defence at Sea." Rigel Publication, London, 2004.

iv. K.S. Sidhu. "The Indian Ocean: A Zone of Peace, Harnam Publication, New Delhi, 1983.

v. Lt. Col. (Retd.) Dr. Bhupinder Singh, "Indian Ocean and Regional Security." Balkassari Printers, Patiala, 1983.

www.ijahms.com

vi. M.L. Bhargava, "The Indian Ocean Strategic through the Ages." Reliance Publication House, New Delhi, 1990.

vii. Nand Lal, "Indian Ocean and Peace Zone Politics," Kanishka Publishers Distributor, Delhi, 1995.

viii. Sudha Raghavan, "The Indian Ocean Power Politics." Lancers Books, New Delhi, 1996.

ix. C.R. Mohan and K.R. Singh, "Indian Ocean and US Soviet Detente," Potriet Publishers Delhi 1991

x. Sanhita Athawale, "India's Indian Ocean Islands," ABC Publication House, Delhi, 1991.

xi. Bindra. S.S., "India and her Neighbours," Publication: Deep and Deep Publications, New Delhi, Edition 1985.

xii. Rajendra Prasad, "India's Security in 21 Century. Challenges and Responses." Publication: Dominent Publication, New Delhi, Edition 2000,

xiii. Vijay Sakhoja. "Confidence Building from the Sea," Knowledge World, Delhi, 2001.

xiv. C.Arasakumar, "MaritimeCooperation –Mantra for security of the Indian Ocean", Journal of Indian Ocean Studies, Vol.14, No.1, April 2006.

xv. David Brewser, "Australia and India: The Indian Ocean and the limits of Strategic Convergence", Australian journal of International Affairs, Vol.64, No.5, 2010.

xvi. Devika Sharma, "Secure routes and the supply of Energy to India", Security Insight, Vol 4, No.4, 2009.

xvii. Gurpreet S Khurana, "China's 'String of Pearls' in the Indian Ocean and its Security Implications", Strategic Analysis, Vol32, No.1, 2008.

xviii. Strategic Analysis, Vol. 32. No. 1, Jan. 2008.

xix. Strategic Analysis, Vol. 32. No. 3, May 2008.

xx. Political Science Review (Jaipur).

xxi. Security Dialogue.

xxii. Indian Journal of Asian Affairs (Jaipur).

xxiii. Hindustan Times, New Delhi.

xxiv. India Today

xxv. Times of India, New Delhi.

xxvi. The Hindu, New Delhi.

xxvii. http://energy.gov/public-services/national-security-safety.

xxviii. http://english.alarabiya.net/en/views/news/world/2014/01/09/Why-all-eyesshould-be-on-the-Indian-Ocean.html.

xxix. http://indiatoday.intoday.in/story/indianoceanindiachinastrategicrivalrytensions/1/271324.html.

www.ijahms.com

xxx. http://inpec.in/2012/09/24/energy-security-concepts-and-concerns-in-india/.
xxxi. http://www.ey.com/IN/en/Industries/Oil---Gas/Indias-energy-security.
xxxii. http://www.foreignaffairs.com/articles/61510/daniel-yergin/ensuring-energysecurity.
xxxiii. http://www.futuredirections.org.au/home/indian-ocean.htmlocean.

www.ijahms.com